21.10.24

Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं

विषय - हिन्दी व्याकरण शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : सरस हिन्दी व्याकरण नौं एवं दस

उपविषय लोकोक्ति पर आधारित कहानी

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी व्याकरण की पाठ्य-पुस्तक सरस हिन्दी व्याकरण भाग नौं, दस के विषय लोकोक्ति पर आधारित कहानी पर चर्चा करेंगे।

बच्चो! जब भी आप इस प्रश्न को हल करें तो सर्वप्रथम दिए गए मुहावरे या लोकोक्ति को ध्यान से पढ़ लें। यह ध्यान रखें कि कहानी का मूल भाव मुहावरे-लोकोक्ति अथवा दिए गए संकेत के अंदर छिपा होता है। कहानी का आरंभ और अंत दोनों ही प्रभावोत्पादक होने चाहिए। कहानी में आवश्यक घटना को ही विस्तार दिया गया हो। संवाद छोटे हों एवं उनकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। कहानी में मुख्य भाव को अवश्य स्थान दें। कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा सजीव होनी चाहिए। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कहानी लिखने के लिए छात्रों के लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है।

बच्चो! आज हम 'खोदा पहाड़, निकली चुहिया' पर एक कहानी पढ़ने जा रहे हैं। आइए, इस उक्ति पर आधारित कहानी को पढ़ते हैं। आप सभी इसे पहले पढ़ेंगे फिर इसे अपने शब्दों में भी लिखने का

अभ्यास करेंगे।

'खोदा पहाड़, निकली चुहिया'

मानव अपनी बुद्धि और क्षमता के द्वारा लगभग हर कार्य को करने में सक्षम है, फिर भी अत्यन्त मेहनत के बावजूद जीवन में कई बार ऐसी घटना घट जाती है कि परिणाम शून्य अथवा उम्मीद से कम प्राप्त होता है। ऐसी परिस्थिति में निम्न उक्ति सत्य प्रतीत होती है कि "खोदा पहाड़, निकली चुहिया।"

इसी से संबंधित एक कहानी मुझे याद आ रही है

पिछले वर्ष मेरे मित्र राहुल की क्रिकेट अकादमी में यह घोषणा की गई कि अगले माह उनकी टीम दूसरे शहर में प्रतियोगिता खेलने हेतु जाएगी और इसके लिए टीम का चयन दस दिन बाद किया जाएगा और शुल्क भी लिया जाएगा। राहुल ने दिन-रात परिश्रम किया। प्रात: चार से आठ बजे अभ्यास के उपरान्त विद्यालय जाना और सायंकाल पुन: कठिन अभ्यास। इन दिनों क्रिकेट पर ही उसका पूरा ध्यान रहा। दस दिन बाद टीम चयनित की गई, जिसमें राहुल का चयन भी हो गया। सब खिलाड़ी रोमांचित थे। सबने नई पोशाक, नया सामान खरीद लिया और प्रतियोगिता शुल्क भी अदा कर दिया।

अब उनकी टीम बस द्वारा रवाना हुई और शहर से लगभग तीन सौ किलोमीटर की दूरी पर राजस्थान के एक छोटे से गाँव के विद्यालय में ले जाई गई। सब खिलाड़ी वहाँ के वातावरण से चौंक गए। विद्यालय जर्जर अवस्था में था

और मैदान भी अस्त - व्यस्त । अगले दिन प्रातः जब मैच आरंभ हुआ तो विपक्षी टीम के खिलाड़ियों को देखकर सब हैरान रह गए। वे अशिक्षित थे और अस्त - व्यस्त पोशाक में गाँव के ही निवासी थे, जिन्हें बल्ला पकड़ने तक का ज्ञान न था। यह ग्रामीण स्तर का मैच था। सब खिलाड़ी अपमानित व अजीब महसूस कर रहे थे, क्योंकि टीम जो सोचकर प्रतियोगिता खेलने आई थी, यहाँ ऐसा कोई माहौल नहीं था। हम सब संपूर्ण प्रशिक्षण के साथ, प्रशिक्षित टीम से खेलने आए थे। व्यथित हृदय के साथ हमने मैच खेला और वापिस दिल्ली आ गए। उस वक्त हमारी अवस्था देखकर यह उक्ति सार्थक प्रतीत हो रही थी, "खोदा पहाड़, निकली चुहिया"। सभी अभिभावक इस घटनाक्रम को जानकर अत्यंत नाराज़ हुए। राहुल ने तो उस अकादमी से ही नाता तोड़ दिया।

गृहकार्य

सभी छात्र इस उक्ति को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे व समझेंगे और इस उक्ति पर आधारित अन्य कहानी को लिखने का अभ्यास करेंगे।

धन्यवाद ।

[अंतिम पृष्ठ]